सफ़र

पुराने कैलेंडर में फ़ेंक दिया है
मैंने चाहत की सधी हुई उंगलियों का जाल
अतीत के सागर से निकाल लाऊंगा
कोई ठहरा हुआ समय
और उसे अपने आज के हुजूर में पेश कर
दुत्कार दूंगा

जिन पलों में महबूब का हुस्न
मैंने खेतों में बिखरा दिया था
उन्हीं के मान से
अब खेतों में निष्ठा का वर मांगूंगा
और शहादत की सदासुहागिन सड़क को
अपने कुंवारे कदमों की ताल दूंगा

मेरी आहों में है सीलन भरी हवाओं की गंध
मेरे माथे पर है पतझड़ का उदास रंग
और मेरी बाहों में है समय का सच
मैं अपने दिल में भरना चाहता हूं
बहारों के उमड़ते अनगिनत गीत...

मुझे पता है
पराक्रम नहीं होते यह पैतृक कर्त्तव्य
यह कोई एहसान नहीं किसी पर
कि मैं किस मौसम में ग़ालिब के शेर
फर्श पर मसल आया हूं
मेरा भी दिल है
रूठों को मनाने का
मित्तर-प्यारे को दिल की बात सुनाने का
मोचियाने पोखर पर बैठ बांसुरी बजाने का
और मासूम गीतों को वक्त-बेवक्त
सलाम कहने का

मैं अपने दिल को
खारे कुएं के पीपल पर टांग आया हूं
और मेरे भीतर की जेब में चुभती है
वसंत की सौगंध

यह सफ़र कहां शुरू होता है
या सफ़र-धूल के कितने रंग होते हैं
या कोई और प्रश्न
आप किसी अफलातून से पूछ आएं
मैं एक अ-सभ्य मुसाफ़िर
केवल यही कह सकता हूं
कि विदाई का कोई शब्द नहीं होता
जो सफ़र होता है वह दर्द नहीं होता
मौत कोई मुकाम नहीं होता
और मंजिल का कोई अर्थ नहीं होता।

(जेल से)

-पाश की कविता

बमानी फ़ैक्टरी में मज़दूरों की बुरी स्थिति

फ़रीदाबाद (म.मो.) बमानी ओभरसीज प्रा.लि. प्लॉट नं. 137 सैक्टर 24 में स्थित इस फ़ैक्टरी का मालिक मितेश भाटिया है। इनकी फैक्टरी अलग-अलग नामों से फ़रीदाबाद में महारानी पेन्टस, महारानी ओभरसीज के नाम से भी है। इस फैक्टरी में भी लगभग 500 के आस-पास मज़दूर काम करते हैं। प्लॉट नं. 137 की फैक्टरी में लगभग 400 मज़दूर कार्यरत हैं जिसमें से लगभग 250 महिला मज़दूर और लगभग 150 पुरुष मज़दूर काम करते हैं और सुपरवाइजर से लेकर एच.आर. तक लगभग दस से 12 लोग कार्यरत हैं।

इस फैक्टरी में लेबर इंस्पेक्टर को दिखाने के लिये ड्यूटी टाईम सुबह 9 बजे से शाम साढ़े पाच बजे तक है और सेलरी का टाईम 7 तारीख है लेकिन हर काम इसका उल्टा है। सही बात तो यह है कि इस फैक्टरी में सिर्फ़ आने का टाइम है जाने का तो कोई टाईम नहीं है और वही टाईम महिला मज़दूरों के साथ भी है। वह आतीं तो सुबह 9 बजे ही है। लेकिन जाने का टाईम शाम साढ़े सात बजे के बाद का ही है। कई बार तो मैनेजमेण्ट ने महिलाओं से रात की पाली में भी काम करवाया।

इस फ़ैक्टरी में मज़दूरों की हालत यह है कि जब इस फ़ैक्टरी का निर्माण हुआ तो इसमें सभी मज़दूर महिला और पुरुष दोनों को कम्पनी की तरफ़ से काम पर रखा गया लेकिन जैसे ही इस फ़ैक्टरी को 3 साल हुए ही थे कि इस फ़ैक्टरी में ठेके पर मज़दूर भर्ती करना शुरू कर दिया और अगस्त 2015 में इस फ़ैक्टरी ने पूरा काम पीस रेट पर कर दिया और सभी मज़दूरों को पीस रेट पर काम करने पर मज़बूर कर दिया। सभी मज़दूरों को बिना बताए हिसाब कर दिया गया, मज़दूरों को सिर्फ़ तनख्वाह ही दी गयी। कोई अतिरिक्त मुआवज़ा नहीं दिया गया जिन लोग़ों ने पीस रेट पर काम करने से मना किया तो उनको बाहर का रास्ता दिखाया गया। कुछ मज़दूर नौकरी छोड़ कर चले गये और कुछ मज़दूरों ने पीस रेट पर काम करना शुरू कर दिया।

खास बात यह है कि शुरू में पीस रेट कुछ अधिक दिया गया लेकिन दो-तीन महीने में ही पीस रेट इतने कम कर दिये गये कि मज़दूरों को न्यूनतम ग्रेड जितना भी तनख्वाह पाना मुश्किल हो गया। इस फ़ैक्टरी में महिलाओं को अपने बच्चों को रखने की जगह सिर्फ़ लेबर डिपार्टमेन्ट को दिखाने के लिये बनवाया गया है। आज तक किसी भी महिला मज़दूर को अपना बच्चा इस फ़ैक्टरी में लाने की इजाजत नहीं मिली है।

भारत सरकार की मुद्रा लोन की धज्जियाँ उड़ी

करनाल: म मो :भारत सरकार की मुद्रा लोन की धज्जियाँ उड़ी। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेरोजगार युवकों व कामगरों के लिए मुद्रा लोन योजना चलाई है। इस योजना के अर्न्तगत भारत सरकार ने 22 हजार करोड़ की गारंटी देने को बावजूद भी करनाल के बैंक, युवाओं को धक्के खिला-खिला कर लोन दे रहे हैं उसमें भी अपना नजराना ले रहे हैं। कभी बैंक अधिकारी कहते है कि जहा आपका ऐरिया पड़ता है उस ब्रांच में जाओ आपका लोन वहीं होगा लेकिन उसके बावजूद भी गारंटी की मांग करते हैं।

मिली जानकारी अनुसार करनाल पंजाब एण्ड सिंध बैंक जी टी रोड़ की ब्रांच के मैनेजर लोगों को घिस्सा दे रहे हैं। किसी को कहते हैं कि पहले छह महीने खाता चलाओ तब लोन मिलेगा, किसी को कहते है गारंटर लाओ, किसी को कहते है कि रजिस्ट्री जमा कराओ।

प्राप्त जानकारी अनुसार पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सामने एक फड़ी लगाने वाले ने बैंक में 1 लाख रूपये का आवेदन किया। बैंक ने 50 हजार देने की हामी भरी जिस पर बैंक चक्कर कटवाने लगा, फिर गारंटी मांगी जब सारी औपचारिकताऐं पूरी कर दी तो मैनेजर ने कहा कि हमारा टारगेट पूरा हो गया। अंत में थक हार कर फड़ी वाले ने कॉरपोरेशन बैंक से लोन लिया।

इस सवांदाता ने जब मैनेजर से पूछा कि आप किस आधार पर गारंटी मांग रहे हैं तो मैनेजर ने कहा कि हमारे बैंक का रूल है। हम प्रधानमंत्री को नही जानते। एक ओर तो भारत सरकार लोगों को रोजगार मुहैया करा रही है दूसरी ओर बैंक लोगों को परेशान कर भारत सरकार की मुद्रा लोन की धज्जियाँ उड़ी ।

उल्लेखनीय है कि इनके अभद्र व्यवहार के कारण करनाल पंजाब एण्ड सिंध बैंक के जोनल मेनेजर को भी एक शिकायत दर्ज कराई गई है कि इसी बैंक के 10 वर्ष पुराने एक खाताधारी ग्राहक से एक लोन के मामले में गारन्टी लेने से इंकार करते हुये कहा कि क्रेडिट इंफ्रमेशन ब्यूरो लिमिटिड के रिपोर्ट मुताबिक आप के उपर 12-50 लाख का लोन खड़ा है आपकी गारन्टी नही चलेगी जो कि उस ग्राहक ने लोन लिया ही नही है।

किस बैंक का लोन खड़ा है मैनेजर बताने से इंकार करते हुये कहा कि क्रेडिट इंफ्रमेशन ब्यूरो लिमिटिड पर पत्राचार करके व इंटरनेट की साईट पर पता लगाओ ।

खाताधारी ग्राहक ने बैंक मैनेजर से क्रेडिट इंफ्रमेशन ब्यूरो लिमिटिड पर पत्राचार करने के लिये इंटरनेट की साईट व आई डी नम्बर मांगा जो बैंक के पास होता है मेनेजर ने इंकार कर दिया । ग्राहक के यह कहने पर कि मैं उच्चाधिकारियों से शिकायत करूगा तो मैनेजर महोदय ने कहा कि हमारे साथ पंगा लेने की जरूरत नही है हमारे मूत में भरी बिच्छू पैदा होते है । इस प्रकार की भाषा प्रयोग करने के आदि है । इस प्रकार के व्यवहार बारे जब इनके स्टाफ से बातचीत की तो स्टाफ के एक कर्मचारी ने नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर बताया कि ये इंसपैक्टर से परमोटी है हमारा स्टाफ भी इसके व्यवहार से दु:खी है ।

सावधान

पिछले कुछ समय से भारतीय समाज में धार्मिक बाबाओं को लेकर पूंजीवादी मीडिया में काफ़ी चर्चा हो गयी है और चर्चा जिन बातों को लेकर हो रही है वह बलात्कार, हत्या, फ्रॉड इत्यादि है। ये अलग बात है कि ये सब पूंजीवादी समाज की आम चारित्रिक विशेषताएं हैं। देखा जाए तो मीडिया ने पूरी चर्चा व बहस इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित की है (बलात्कार, लूट, हत्या, फ्रॉड इत्यादि) और सामान्य जन मानस को भी यही बात संप्रेषित हुई है कि कुछ बाबा भ्रष्ट, पतित या अनैतिक हो गये हैं। इनको सज़ा मिलनी चाहिये वरना बाकी सब ठीक है। आम जनमानस का बाकियों में विश्वास बरकरार है।

पिछले दिनों मीडिया में एक नया मामला न्यूज चैनलों तथा समाचार पत्रों की मुख्य हेडिंग बना रहा। ''राधे मां'' का मामला। इनको लेकर भी खूब चर्चा रही। महिला होने तथा पुरुष प्रधान समाज होने के चलते इनके बारे में चर्चा का जो बिन्दु रहा वह था आधुनिक कपड़े पहनना, डांस करना, रहन-सहन इत्यादि।

लेकिन सवाल यह है कि क्या बाबाओं का इस तरह से जो मकड़ज़ाल बढ़ता जा रहा है उसमें समस्या केवल अनैतिक और पतित हो जाने की है जैसा मीडिया बता रहा है या समस्या कुछ और है ? नहीं! ये बातें तो केवल पूंजीवादी मीडिया द्वारा मज़दूर-मेहनतकशों को भ्रम में रखने के लिये फैलाई जाती है। अगर बात की गहराई में जायेंगे तो पता चलेगा कि, किस तरह से पूंजीपति वर्ग द्वारा पालित-पोषित ये बाबा मज़दूर-मेहनतकशों को गुमराह करने में सफल हो रहे हैं।

आज जब हर तरफ़ हर कोई परेशान है तो इस तरह के बाबा, कल्पनालोक की मनगढंत कहानिया सुनाकर, मज़दूर-मेहनतकशों के गुस्से को ठंडा करने का काम बड़ी अच्छी तरह से निभा रहे हैं।

अपने पिछड़ेपन के चलते अधिकतम मेहनतकश अवाम भी इस तरह के कल्पना लोक की कहानिया सुनकर तात्कालिक राहत महसूस करता है क्योंकि पूंजीपति वर्ग का शोषण ही इतना निर्मम है कि वह इस तरह के बाबाओं की शरण में जाने को मजबूर है। इस तरह की तात्कालिक राहत ठीक उसी तरह से होती है जिस तरह से कोई परेशान आदमी अपनी परेशानी को भूलने के लिये नशे का इस्तेमाल करता है और जितनी देर नशे में रहता है उसे लगता है समस्या खत्म हो गयी और वह राहत महसूस करता है लेकिन नशा उतरते ही समस्या जस की तस बनी रहती है। फ़िर वह और नशा लेता है और इसी तरह से नशे की गिरफ्त में फंसता चला जाता है। ठीक यही स्थिति बाबाओं के कल्पनालोक की कहानियों के साथ है।

पूंजीपति वर्ग यह अच्छी तरह से जानता है कि आज मेहनतकश की जो हालत है, इस हालत के चलते अगर वह यह समझ गया कि उसका उसली दुश्मन कौन है तो उसका गुस्सा कभी भी उसके खिलाफ़ बगावत का रूप धारण कर सकता है। इसी से बचने के लिये वह तमाम बाबाओं और अन्य हथकंडों को सचेत रूप से अपनाता है। मज़दूर वर्ग को इन हथकंडों से सचेत होने की जरूरत है तो दूसरी तरफ़ जो भी इंसाफ़-पसंद लोग इन बातों को समझते हैं, उनका भी कर्त्तव्य बनता है मज़दूर-मेहनतकशों को इस तरह के पिछड़ेपन से उन्हें जागरूक किया जाए तथा उनकी समस्याओं तथा उसके समाधान के लिए, समाज परिवर्तन के लिये उन्हें तैयार किया जाए। क्योंकि समस्याओं का समाधान मज़दूरों के राज समाजवाद में है ना कि इन बाबाओं के पास।

-नागरिक, विजय दिल्ली

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब